नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305

इ-मेल: mgahvpro@gmail.com वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विश्वविद्यालय में 'दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति एवं विरासत' विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन

भारत की सांस्कृतिक विरासत समृद्ध है - प्रो. आनंद वर्धन शर्मा

वर्धा, दि. 25 फरवरी 2018 : भारत की सांस्कृतिक विरासत समृद्ध है और इसकी सीमाएं काफी

बड़ी है। दुनिया के अनेक देशों में संस्कृति की वजह ही हमारी पहचान है। इतिहास का आकलन करते

समय केवल दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में ही नहीं अपितु यूरोपीय देशों को भी शामिल करना चाहिए, जहां भारतीय संस्कृति की उपस्थिति देखी जा सकती है। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने व्यक्त किए। वे अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना,

नई दिल्ली के तहत भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संयुक्त तत्वावधान में 'दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति एवं विरासत' विषय पर आयोजित दो दिवसीय (24-25 फरवरी) अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे। संमेलन का समापन विश्वविद्यालय के श्यामा प्रसाद मुखर्जी भवन के कस्तूरबा सभागार में रविवार, 25 को किया गया।

इस अवसर पर मंच पर भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, इलाहाबाद के प्रो. ईश्वचर शरण विश्वकर्मा, प्रो. अरविंद जामखेडकर, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के संगठन सचिव डॉ. बाल मुकुंद पाण्ड्येय, आयोजन सचिव तथा विवि के जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार तथा इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी के कुलपति तथा सम्मेलन के मुख्य संयोजक प्रो. एस. पी. बंसल मंचासीन थे।

प्रो. शर्मा ने कहा आयोजन के प्रति प्रसंन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार की पहला संमेलन विश्वविद्यालय में लेने के लिए इतिहास संकलन योजना एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद धन्यवाद का पात्र है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भारतीय संस्कृति एवं विरासत के विषयों एवं विचार-विमर्शों को अकादमिक जगत में आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के डॉ. संतोष कुमार शुक्ल ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. एस. पी. बंसल ने प्रस्तुत किया। वंदे मातरम के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। समापन के पूर्व विभिन्न सत्रों में वक्ताओं ने विचार रखे तथा शोध पत्र प्रस्तुत किये। समापन सत्र में देश भर से आए प्रतिनिधि विद्वान, शोधकर्ता, विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

हिंदी विश्वविद्यालयात 'दक्षिण व दक्षिण पूर्व आशियात भारतीय संस्कृती व विरासत' विषयावर आंतरराष्ट्रीय संमेलनाचा समारोप

भारताचा सांस्कृतिक ठेवा समृद्ध आहे - प्रो. आनंद वर्धन शर्मा

वर्धा, दि. 25 फेब्रुवारी 2018 : भारताचा सांस्कृतिक ठेवा महान आणि समृद्ध आहे. जगातील अनेक देशांमध्ये भारताची ओळख येथील संस्कृतीमुळे आहे. इतिहासाचे आकलन करतांना केवळ दक्षिण आणि दक्षिण पूर्व आशियाच नव्हे तर यूरोपीय देशांचाही समावेश करायला हवा. असे विचार महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाचे प्रकुलगुरु प्रो. आनंद वर्धन शर्मा यांनी व्यक्त केले. ते अखिल

भारतीय इतिहास संकलन योजना, दिल्ली अंतर्गत भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, दिल्ली व महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा यांच्या संयुक्त विद्यमाने 'दक्षिण व दक्षिण पूर्व आशियात भारतीय संस्कृती आणि विरासत' या विषयावर आयोजित दोन दिवसीय (24-25) आंतरराष्ट्रीय संमेलनाच्या समारोपीय कार्यक्रमाचे अध्यक्ष म्हणून बोलत होते. यावेळी मंचावर भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषदेचे सदस्य सचिव प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, इलाहाबादचे प्रो. ईश्वचर शरण विश्वकर्मा, प्रो. अरविंद जामखेडकर, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजनेचे संगठन सचिव डॉ. बाल मुकुंद पाण्डेय, आयोजन सचिव प्रो. अनिल कुमार तथा इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ीचे कुलगुरु तथा सम्मेलनाचे मुख्य संयोजक प्रो. एस. पी. बंसल उपस्थित होते. संमेलनाचाच समारोप विश्वविद्यालयाच्या श्यामा प्रसाद मुखर्जी भवनातील कस्तूरबा सभागृहात रविवार, 25 रोजी झाला.

प्रो. शर्मा यांनी पहिले संमेलन विश्वविद्यालयात आयोजित करण्यासाठी इतिहास संकलन योजना आणि भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषदेचे आभार मानले. भारतीय संस्कृतिचा व्यापक प्रचार-प्रसार करण्यासाठी यामुळे बळ मिळेल अशी आशा त्यांनी व्यक्त केली. यावेळी मंचावरील वक्त्यांनी आपले विचार मांडले. कार्यक्रमाचे संचालन जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालयाचे डॉ. संतोष कुमार शुक्ल यांनी केले तर आभार प्रो. एस. पी. बंसल यांनी मानले. वंदे मातरम ने कार्यक्रमाची सांगता झाली. समारोपाआधी विविध सत्रांमधून वक्त्यांनी विचार मांडले व शोध निबंध सादर केले. समापन सत्रात देश भरातील प्रतिनिधी विद्वान, शोधकर्ते, विद्यार्थी मोठया संख्येने उपस्थित होते.